रंगों के साथ

(काव्य संग्रह)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

रंगों के साथ

(काव्य संग्रह)

(कमल वीथि पुष्प-6)

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-81-937361-9-7

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

मूल्य: ६५.०० रुपये

आवरण चित्र: उर्वशी बौड़ाई

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

RANGON KE SATH by Dr.Bharti Verma Baurai'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है

अपनी बात

राकेश आनंद बौड़ाई

जीवन संगी
राकेश आनंद बौड़ाई को समर्पित
जो सदा मेरी रचनाओं के
प्रथम श्रोता और आलोचक होने के साथ
मेरे हर कार्य में साथ होते हुए
हर कदम साथ रखने में
विश्वास रखते हैं।

बचपन में नानी के घर और उसके आसपास के घरों में स्नेह-वात्सल्य और प्रेम के रंग कुछ इस तरह से मन पर चढ़े कि आज भी उनका रंग मन से उतर ही न पाया। यह अलग बात है कि अब उन रंगों के परिवर्तित होते स्वरूप ने उन पुराने चढ़े रंगों की चमक को मन में और स्थायी बना दिया है।

जीवन में चारों ओर जिधर भी दृष्टि जाती है विविधता लिए रंगों का इतना संसार बिखरा पड़ा है कि होली के रंग तो उनके आगे कुछ मायने नहीं रखते। अंतर्मुखी, भावुक मन वाले के लिए गिरगिट की तरह बदलते मानव रंगों को देख कर आहत हो उठना स्वाभाविक है। आहत मना व्यक्ति अपने मन- प्राणों पर अंकित पुराने रंगों की चमक को गहनता से जीते हुए अपने लिए एक अलग संसार का निर्माण करता है। जहाँ उसकी कल्पनाएँ होती हैं, उसकी सोच होती है, अपने चारों ओर घटती जो बातें उसे व्यथित करती करती हैं... उन्हें बदलने के लिए विचार उत्पन्न होते रहते हैं। उन्हें रूप प्रदान करने के लिए कोई लेखनी तो कोई तुलिका थामता है, कोई सेवा करने समाज के लोगों के बीच जाता है। परिवर्तन

की बयार अपने से ही बहे... की सोच पर फिर व्यक्ति विकृति के रूप में आए रंगों को बदलने के प्रयास में जुट जाता है। भावनाओं की अभिव्यक्ति होने लगती है, सकारात्मक सोच बनने लगती है । एक कदम बढ़ता है तो कई कदम साथ आ मिलने लगते हैं।यही जीवन है।

घर से आरंभ होती है व्यक्ति की यात्रा, तो रंग उसके साथ जुड़ने शुरू हो जाते हैं।और ये साथ जीवन की अंतिम श्वास तक बना रहता है। इन्हें जीवन की संजीवनी भी कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

लेखनी हाथ में आई तो संसार का जो भी रंग मन भाया, जिसने मन दुखाया, जो कंटक बन, चुभकर लहूलुहान कर गया, ठग गया.. मन से निकल कागजों पर अंकित होने लगा। इस तरह रंगों का साथ जीवन का महत्वपूर्ण साथ बन गया।

रंगों के साथ चलते हुए हर्ष, उल्लास, विषाद अब सब अपने लगने लगे हैं। संसार हर्ष के रंगों से सराबोर दिखने लगा है। जो अच्छा नहीं हो रहा है वो भी बदलेगा... ये आश्वस्ति भी उन पुराने चढ़े हुए रंगों ने ही प्रदान करते हुए धीरे से आकर कानों में सुगबुगाया है कि चलती चलो इनके साथ...देखना सब कितना मनमोहक होगा। तो बहरहाल,... "रंगों के साथ" मैं तो अभी भी यात्रा पर हूँ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

अनुक्रमणिका

1. अर्थ	7
2. कल	8
3. अचानक	9
4. क्यों	10
5. नगर	11
6. मैं	12
7. घुटन	13
8. धूप	14
9. इंद्रधनुष	14
10.अहसास	15
11.कविता	16
12.इतिहास बिंदु	17
13.सूरज-१	18
14.सूरज-२	18
15.सूरज-३	19
16.सूरज-४	19

17.अंश	20
18.चलो...	21
19.साक्ष्य	22
20.व्यथा	23
21.चले आओ	24
22.कब तक	25
23.नव वर्ष ८६	26
24.जिंदगी	27
25.मनमीत	28
26.बूँद	28
27.अलिखित कविता	29
28.तुम्हारे जाने के बाद	30
29.हो जाते हैं	31
30.रंगों के साथ	32

अर्थ

मनमाने अर्थ
जब लगने लगते हैं
शब्दों के
समाप्त होने लगती है
संबंधों की ऊष्मा,
स्पष्टीकरण के प्रयास
होते रहते हैं असफल,
शब्दों में निहित संवेदना
लगती है निहायत खोखली,
थोथे लगते हैं
आपसी वार्तालाप,
विश्वसनीयता
उड़ जाती है
वाष्प बन
कभी न लौटने के लिए।

कल

तर्कों से भले ही
जीत लो बाह्य
यह सामयिक ही होगा,
कल मेरी बात
खुदेगी जिन पत्थरों पर
भले ही
फिंकवा दो उन्हें
नदियों-समुद्रों में,
वे मिटेंगे नहीं..
आज जो बातें
उड़ती हैं हवा में
धुएँ सी
मथेगीं कल अंतस
मचायेंगी करूण हाहाकार
पर, यह कल होगा,
आज तो मुझे
झेलनी है पीड़ा
उसी कल की आशा में।

अचानक

खुशियाँ और दुःख
जब मिलते हैं अचानक
बाँध तोड़
किनारे तोड़
बहने लगती हैं
नदी मन की...
सब देखते हैं भौचक
नाटक के समान,
पर नदी को
इससे कोई सरोकार नहीं,
वह बहती है
बहती जाती है
सुख-दुखों के
आने-जाने में
मानव मात्र की
सांत्वना-संवेदना को
शब्द देती
बहती ही जाती है।

क्यों

क्यों
होता है ऐसा?
बड़ी-बड़ी बातों पर
फटते नहीं ज्वालामुखी,
छोटी-छोटी बातें
पहाड़ बन
अवरुद्ध कर देती हैं
पंथ प्रेम का,
बना देती हैं
प्रेम नदी में अवरोध,
चल पड़ता है सिलसिला
असमाप्त बहसों का...
बीतते चले जाते हैं
जीवन के अमूल्य क्षण
जिनकी संभावनाएँ
होती हैं
अनंत, अगणनीय
और
आकाश तक ऊँची
मानव को
देवताओं के शिखर तक
ले जाने की।

नगर

सॉंपों का

नगर है ये!

हर कोई यहाँ

पीकर दूध

डसता है निरंतर

और भरता है दंभ आजीवन

मित्रता निबाहने का।

मैं

घने अंधकार में
चमकती आँखों की
रोशनी का गीत हूँ मैं.....!!
मरुथल की रेती में
शीतलता देती
बहती नदी का गीत हूँ मैं.....!!
काँटों- पत्थरों
पर्वतों को रौंदती
सफलताओं को
वरने की कोशिश करते
झरने का मधुर संगीत हूँ मैं....!!
यहाँ-वहाँ फुदकती
दाने चुगती-चुगाती
उस नन्हीं गौरैया की
सखी-सहेली,
बस उसी की तो
मीत हूँ मैं.....!!!!!

घुटन

घुटन की
जिंदगी से दूर
कोई तो ऐसी
जगह हो
जहाँ ले सकें
चंद साँसें आराम से...
लगायें न लोग तोहमतें,
बहता हो जीवन
नदी सा निर्बाध
ऊबड़-खाबड़ किनारों से,
पानी से
पारदर्शी मन मिलें
तो लगे
धरती पर जैसे
उतरा हो स्वर्ग,
कल्पना की जमीन
बने यथार्थ,
तभी घुटन जिंदगी की थमेगी
मिलेगी चंद साँसें
राहत की।

धूप

छज्जे पर
ठुमकती धूप
झरोखे से
दबे पाँव आयी
जगा कर
लौट गई
अपने घर।

इंद्रधनुष

मन के
आकाश पर
प्यार का इंद्रधनुष
गरीब की
झोंपड़ी में
जलते दिए सा।

अहसास

उमस भरे
गर्म दिनों में
अकेलेपन का अहसास
कंपाता है....!
भोर के
नीलेपन में
अपनेपन का अहसास
राहत देता है....!
चाँदनी रात में
उफनते दूध सा
प्यार का अहसास
मन में पुलक जगाता है....!
रात के अंधेरे में
दिन के आग लगाते प्रकाश में
चाँदी के टुकड़ों पर
बिकता प्यार
जुगुप्सा के बांध तोड़
सीमाहीन अनंत में
खो जाता है......!!!

कविता

जब-जब
ताल ठोंक कर
गरज-गरज कर
जोर-शोर से
वाग्धनुष पर
प्रत्यंचा को खींच
कान तक
नया तीर छोड़ा जाता है
तब-तब
आक्रोश का
फन फैला कर
जन्म लिया करती है
एक नई कविता,..!!!

इतिहास बिंदु

बार-बार
तीरों से बिंधी
रक्तस्नात मैं
सिलती-उधेड़ती रही
सीवन जीवन की....
शायद
हृदय का मर्म
उद्‌घाटित कर सकूँ,
पर, रह गई बन कर
काल के
कपाल पर लिखा
एक अस्पष्ट, अलिखित
इतिहास बिंदु!

सूरज-१

सूरज नहाने गया
बाल्टी रखी और
नल खोल दिया
पुकारा किसी ने
कपड़े पहन
निकला बाहर
चल दिया संग
सैर-सपाटे को
उधर दुनिया में
बाढ़ आ गई।

सूरज-२

बादलों से
निकलने की
कोशिश करता
सूरज
हल करता हो जैसे
गणित का कोई
दुरूह प्रश्न।

सूरज-३

तौलिया बांधे
फिर रहा है सूरज
दोस्त छोड़ते ही नहीं
गुत्थियाँ राजनीति की
सुलझाने में लगे हैं
सूरज परेशान
नहा नहीं पाता
इधर सूखा पड़ रहा
दुनिया में।

सूरज-४

सूरज से
रूठ कर किरण
जा पहुँची मायके
उदास, थका सूरज
बादलों के किवाड़ लगा
घर में पड़ा रहा
इधर मौसम सर्द
बना रहा।

अंश

आरंभिक जीवन
माँ-पिता के लिए
फिर पति, बच्चों
बहुओं, नाती-पोतों के लिए
उनकी मर्जी से जिया,
इतना लंबा जीवन....
कितना किया, जिया
कितना दिया, लिया,
पर....
किससे पूछूँ?
जीवन का
कौन सा अंश
अपने लिए
अपने मन से
अपने आप जिया....!

चलो...

चलो
कल की
सुबह के नाम
एक गीत लिखें....
स्थैर्य का
कुहासा तराश
कुछ तरो-ताजा दिखें.....
उम्र के साथ
लिए हाथों में हाथ
कुछ पग साथ धरें.....
रहे जो
दिलों में सबके
ऐसा कुछ कर्म करें....
झरने से
होड़ कर हम
धारावार झरें...
जीवन की
नई परिभाषा सोच
हर पल का अर्थ ढूँढें...
तब पत्ते-पत्ते पर
अपनी जीत का
गीत लिख खुश दिखें......।

साक्ष्य

बदल जायें
अर्थ शब्दों के
बनें परिभाषाएँ नई
प्यार और विश्वास की,
नजरिया
और हो जाए चाहे
देखने और जीने का,
भले ही
दैनिक जीवन की भट्ठी में
मोम बन गल जायें
मन की तमाम
कोमल कल्पनाएँ..
परिचय से
परिणय तक की
यात्रा के अनगिन
पड़ावों के मध्य
सतरंगी
इंद्रधनुष सा रंगिया
अपने रंगों को समेटे
वहीं तो होगा.....
बदल जाए सबकुछ
पर, कुछ तो पहले जैसा होगा
जो पहचानेगा
आवाज दे बुलाएगा हमें
कहेगा कुछ अपनी
सुनेगा कुछ हमारी...
सुनो!
भले ही वहाँ
बने न कोई
धरोहर प्रेम की,
पर मिलन का मूक
सक्षम साक्ष्य
पूजा स्थल तो होगा
वह हमारे लिए.....।

व्यथा

पहाड़ों के पीछे
जब ढलता है सूरज
धीमी पदचाप सी
एक आवाज
देती है सुनाई पहाड़ों की...
'हमने सदा
सबकी सुनी-गुनी
हमारी कथा
किसी ने न सुनी
इसी से
मन की व्यथा
हो उठी है दोगुनी,
सूरज के ढलते ही
हम स्थिर, अचल हैं
सेवा संकल्प पर
अपने अटल हैं,
अब तक तुम्हें
सभी कुछ दिया है
मिट्टी, खेत, लकड़ी, जंगल
बिना कहे-सुने
देते चले आए हैं,
बर्फ़ीली हवाओं को
रोका सदा
तुम्हारी ओर आने से
वरना होते तुम भी
तिब्बत के पठार की तरह बंजर..

अपनी बर्फ़ीली चोटियों की
प्राकृतिक सुंदरता से
सदा मोहा है मन
उन भावुक प्रतिभाओं का
जो बाँध सकते हैं हमें
शब्दों, रंगों में
कर सकते हैं क़ैद चित्रों में...
इतने पर भी
जब देखते हैं अपने को
कटते, जलते और बँटते
तब रोक नहीं पाते
अपने आवेग को,
बार-बार सोचते हैं
किससे कहें?
सुनेगा भी कौन?
पर हम बार-बार कहेंगे
ओ मनुष्य!
क्षणिक, अल्प स्वार्थ के लिए
हमें पीड़ा न दो
बिना कहे-सुने
कटे,जले, बँटे बिना भी
सदियों से दिया है
देते रहेंगे..
बस, हमें काटो मत,
जलाओ मत,बाँटो मत।

चले आओ

लंबा दिन
बरखा, धूप की
आँखमिचौली से भी
घटता नहीं,
छात्रावास की लड़कियों के
बचे फेंके हुए खाने पर
भौंकता, झपटता
कुत्तों का झुंड
खुश है बहुत
बिना श्रम किए पल जो रहा है,
भले ही
बाद में मरें भूखे,चिल्लायें
एक-दूसरे को
काट-काट कर मार डालें
आदत से मजबूर
उपाय नहीं...
दिन चढ़ने से दिन ढलने तक
दुखती आँखों से
खिड़की की सलाखों पर
सिर रख
शून्य में अपने
प्रिय को तलाशना
मन फ़लक पर चित्र आँकना
कितना सुखद लगता है..
फागुनी गीत गाता
फूला सेमल गाछ भी
सावन को टेरने लगा है
पुरवाई संदेसों का पुलिंदा लिए
बहने लगी है...
सुनो!
सावनी रिमझिम में
भीग-भीग गीत गुनगुनाने
पुरवैया का संग लिए
चले आओ
तो जानूँ!

कब तक

हे प्रभु!
सब शुरू होता है तुमसे
मेरा हर दिन-रात
मेरा रुदन-हास...
कल्पना, विचार
सब प्रेरित हैं तुम्हीं से..
खुली खिड़कियों से
जब आती है हवा
दुलराने मुझे
कहीं भी
क्यों न खोई हुई भी रहूँ मैं
तेरा परस पा उसमें
ऊर्जा से
भर उठती हूँ मैं!
बस एक बार कहो
प्रभु मेरे!
सीमाओं में बंध
जिऊँगी कब तक?

नव वर्ष ८६

बैठो मित्र!
कुछ देर,
भले ही तुम्हें
गली-गली, घर-घर
नई उमंग
नए सपने देने हैं,
मुझे कुछ देने से
डरते हो शायद....
डरो मत नव वर्ष!
मैं दूँगी तुम्हें
कुछ सपने सूत से बुने
कुछ वादे भविष्य के,
तुम बस गवाह रहना
मेरे संघर्षरत होने के,
मुझे पराजित करने वाली
उन शक्तियों के सम्मुख
जो अकड़ते-तनते
कभी कहें
विजय यात्रा का
आरंभ ही कहाँ था?
कीर्ति पताका
कैसे-कहाँ फहरती?

जिंदगी

बड़ी विचित्र
कठिन है यह जिंदगी
जिसे तुम्हारे बिन अकेले
जीती हूँ मैं!
इंसानियत की
तलाश में निकलती
हैवान बन लौटती हूँ
अंतस का विष
कागज पर उतारती हूँ
जुड़ने की कोशिश में
बार-बार टूटती
पर हारती नहीं हूँ....
चल पड़ती हूँ
नई मंजिल के
नए सफर के लिए,
तब भटकती हूँ
बस्ती-बस्ती
जंगल-जंगल
नदी-नदी
जहाँ लहर-लहर पर
बिछे होते हैं सपने
भविष्य के....
पत्ती-पत्ती पर
लिखा होता है प्रेम गीत
पढ़ने को जिसे नहीं चाहिए
कोई भाषा,
सुदृढ़ मेल है
मेरे-इनके बीच
तभी तो सौंपी हैं
तुम्हारे नाम लिखी-अनलिखी
अश्रुसिक्त पातियाँ!
मानव से अधिक
वफादार है प्रकृति
समझती है व्यथा को
आगे बढ़ लगाती है अंक
देती है सांत्वना....
मन में तैरते हैं प्रश्न
असंख्य तारों की तरह
जिनका एक उत्तर है
तुम्हारा नाम
जो है मेरी पहचान
मेरी शक्ति
जीवन के संघर्षों से
जूझने के लिए...
मैं जूझती हूँ
टूटती हूँ,झुकती नहीं
छोटे-छोटे सुखों को
सहेजती-सँवारती
सोचती रहती हूँ
बड़ी विचित्र
कठिन है यह जिंदगी
जिसे तुम्हारे बिन अकेले
जीती हूँ मैं!

मनमीत

दोस्ती
परिचय और
स्नेह का नाता
बस इतना नहीं
मनमीत!
साथ रहे
अलग हो
थोड़ी देर में
झट मौसम से बदल गए..
यहाँ तो
लिखना होता है मिलकर
एक नया महाकाव्य
बोलो....लिख सकोगे?

बूँद

हरी घास पर
ओस की बूँद सी
मेरे सपनों की दुनिया....
तुमसे मिलते ही
देखो न!
देखते ही देखते
कैसे समुद्र बन गई....!

अलिखित कविता

शब्द दर शब्द
अंकित होते गए
मानस पर,
कब और कैसे
बन गए
एक अलिखित कविता!
मौसम की मेहँदी
मेरे हाथों में लगा
अब क्या देखते हो
चुपचाप!
नए रिश्तों के
रेशमी धागे...
अनछुए कुँवारे
सपनों की महक...
स्नेहिल छुअन और
तुम्हारा साथ यूँ ही रहे बना....
अंकित होती रहे अनवरत
प्यार की महक से
रची-बसी
खूबसूरत कविता!

तुम्हारे जाने के बाद

समय जैसे
थम गया है
तुम्हारे जाने के बाद!
पत्तियों की
सरसराहट सी
वो धीमी गुफ़्तगू
गायत्री मंत्र सा जपती हूँ
तुम्हारे जाने के बाद!
तुम्हारी यादों की
महक में रची-बसी
कभी अपने में तुम्हें
तो कभी तुम में अपने को ढूँढती
दरवाजे की चौखट पर
ठिठकी खड़ी हूँ
तुम्हारे जाने के बाद!
सच/सपने को अलगाती
प्यार के पलों को
यादों में जीती
तुम्हीं में खोई हूँ
तुम्हारे जाने के बाद!

हो जाते हैं

मेरी
पहचान की परिधि
तुम तक सीमित है न,
इसी से
सोच के सिलसिले
मुझ से शुरू हो
तुम पर समाप्त हो जाते हैं!
चाहत यात्रा का लक्ष्य
तुम्हीं हो न,
रोकने पर भी पग
तुम्हारे द्वार तक पहुँच
अवरुद्ध हो जाते हैं!
मेरे आराध्य देव
तुम्हीं हो न,
इसी से नयन
तुम्हारे चरणों में
अर्ध्य दे, फिर-फिर
भर आते हैं!

रंगों के साथ

रंगों के साथ
जीकर जाना
जीवन में रंगों का सलोना सुख...!
रंगों ने दिया
सपनों का नव
अंतहीन व्योम भरने को उड़ान.....!
रंगों के साथ
देखे जीवन के
परिवर्तित होते विविध चित्र......!
रंगों का साथ
छुटने पर जाना
बेरंग होने का अनकहा दुःख.....!
रंगों के पार
देख कर जाना
अंतहीन दुखों का कड़वा सच........!
रंगों ने सौंपा
धीरे से मन में
अनवरत चलने का अमिट विश्वास.........!!!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई
माँ	- श्रीमती कमला वर्मा
पिता	- बाबूराम वर्मा
जन्म स्थान	- देहरादून (उत्तराखण्ड)
जन्मतिथि	- 04 अक्टूबर 1957
शैक्षिक योग्यता	- एम.ए. (हिन्दी साहित्य), बी.एड., डी.फिल.(शोध द्वारा - गद्यकार बच्चन : एक आलोचनात्मक अध्ययन)
जीवन संगी	- श्री राकेश आनंद बौड़ाई
संतान	- दो (एक आत्मजा, एक आत्मज)
व्यवसाय	- 24 वर्ष तक अरुणाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में अध्यापन। अक्टूबर 2005 मे स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली।
संप्रति	- स्वतंत्र अध्ययन और लेखन
निवास स्थान	- ''प्राच्य शिखर'' 95, दिव्य विहार, डांडा धर्मपुर, डाकघर - नेहरुग्राम, देहरादुन उत्तराखण्ड, पिन - 248001
फोन नं.	- 9759252537
मेल आई.डी.	- bharati.bourai007@gmail.com
प्रकाशित एकल पुस्तकें	- (1) कविता का अरुणांचल (कविता संग्रह) 1985 (2) बच्चन साहित्य : अध्ययन का उपक्रम (आलोचना) 1998 (3) सृजन समीक्षा 2018 (4) उपहार (काव्य संग्रह) (5) रंगों के साथ (काव्य संग्रह) (6) अंतर्मन की यात्राएँ (काव्य संग्रह) (7) आखर मीत (काव्य संग्रह)
प्रकाशित साक्षा संग्रह	- 18 साझा संग्रहों में रचनाएँ प्रकाशित
पत्र पत्रिकाएं	- लगभग 70 पत्र-पत्रिकाओं, ई पत्रिका, ब्लॉग में रचनाएँ प्रकाशित
सम्मान	- वाणिज्य मंत्री (वर्तमान रक्षा मंत्री) निर्मला सीतारमण सहित विभिन्न संस्थाओं, प्रकाशनों द्वारा लगभग 12 सम्मानों से सम्मानित
सामाजिक क्षेत्र	- अपने पति के ''अविराम प्रवाह ट्रस्ट'' द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों में सहयोग।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-81-937361-9-7

मूल्य- 65/-